प्रसार बुलेटिन सं०- V/V/F/232/2020

बटेर पालन से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार सृजन

डॉ० नरेन्द्र कुमार
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, हाजीपुर (वैशाली)

कोविड - 19 संकट के कारण लोगों का रोजगार छीन रहा है, तथा शहर से गाँव की ओर मजदूर एवं बेरोजगार लोगों का पलायन हो रहा है। घर लौटे मजदूरों के अपना व्यवसाय शुरु करना चुनौती से कम नहीं है, ऐसी स्थिति में आय का साधन को बढ़ाने के लिए बटेर पालन नौजवानों के लिए एक उत्तम व्यवसाय हो सकता है तथा बटेर का अण्डा और मांस के द्वारा पोषण की सुरक्षा को भी प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि बटेर का अण्डा मुर्गी के अण्डे से सस्ता है, तथा उसमें जींक और फॉस्फोरस की मात्रा ज्यादा होती है जो कि हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

बटेर पालन व्यवसाय विश्व में नहीं, अब भारत और बि[illegible] में भी अत्यंत लाभकारी है, क्योंकि पाँच सितारा होटलों में बटेर के माँस के भाँति-भाँति व्यंजन महंगे दामों पर बेचे जाते है।

बटेर एक लाभकारी व्यवसाय है

वर्त्तमान में बटेर पालन एक कुटीर उद्योग का रुप ले चुका है। इसकी उपयोगिता तथा कम लागत के कारण इसकी सामाजिक मान्यता में वृद्धि हो रही है। बटेर पालन का व्यवसाय धीरे-धीरे बढ़ रहा है। निश्चित ही इसके व्यापक प्रसार के पीछे आर्थिक लाभ है। अधिकांश शहरों में इसकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है। जिससे इसके धन कमाने की असीम संभावनाएं हैं। अभी माँग के अनुसार आपूर्ति नहीं हो पा रही है। विदेशों में बटेर पालन बड़े पैमाने पर की जा सकती है।

बटेर पालन में कम पूँजी की आवश्यकता

बटेर पालन प्रारंभ करने के लिए बहुत अधिक पूंजी की आवश्यकता नहीं होती है। पूंजी की उपलब्धता के अनुसार इनकी संख्या और रहने की व्यवस्था को परिवर्तित किया जा सकता है। बटेर पालन पिंजरा और बिछावन विधि के द्वारा शुरु किया जाता है। बिछावन व पिंजरा पद्धति द्वारा बटेर पालन में कोई दिक्कत नहीं आती हैं। बटेर का आवास हवादार रोशनीयुक्त तथा उसमें पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। एक व्यस्क बटेर को 200 वर्ग सेंमी0 जगह चाहिए। मुर्गी के अपेक्षा बटेर ज्यादा गर्मी वाले वातावरण में रह सकता है। अत्यधिक गर्मी पड़ने पर भी बटेर को उतनी परेशानी नहीं होती है।

बटेर पालन के फायदें

- व्यवसायिक बटेर पालन में टीकाकरण की कोई जरुरत नहीं होती है। इसमें बीमारियाँ कम होती हैं ।
- 6 सप्ताह (42-45 दिन) में बटेर अण्डा उत्पादन शुरु कर देती है।
- बटेर को खुले में नहीं पाला जा सकता है, इसका पालन बंद [illegible]र किया जाता है, क्योंकि यह बहुत उड़ने वाला पक्षी है।
- मांस उत्पादन के लिए बटेर 4-5 सप्ताह में बजार में बेचने योग्य हो जाते हैं ।
- अण्डा उत्पादन करने वाली एक बटेर एक दिन में 25 से 30 ग्राम जबकि मांस उत्पादन करने वाली एक बटेर 30 से 35 ग्राम दाना खाती है।
- अजोला का प्रयोग करके दाना में बचत कर सकते हैं। बटेर अजोला को बड़े चाव से खाती है अजोला में प्रोटीन एवं मिनरल प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक रुप से मिलता है। इससे बटेर का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।
- मादा बटेर प्रति वर्ष 200 अण्डे देती है। बटेर के अण्डे का वजन 10 ग्राम होता है।
- छोटा आकार होने के कारण इसका रख-रखाव काफी आसानी से हो सकता है।

आहार की व्यवस्था

बटेर के चुजे को संतुलित आहार के साथ-साथ अच्छी शारीरिक वृद्धि के लिए 6-8 प्रतिशत शिरे या शक्कर का घोल 3-4 दिनों तक देना चाहिए। 0-3 सप्ताह तक 25 प्रतिशत, 4-5 सप्ताह में 20 प्रतिशत प्रोटीनयुक्त आहार देना चाहिए। बटेर चूजे के आहार में मक्का 45 प्रतिशत टूटा चावल 15 प्रतिशत मूंगफली खल 15 प्रतिशत सोयाबीन का खल 15 प्रतिशत, मछली का चूर्ण 10 प्रतिशत तथा खनिज लवण विटामिन एवं कैल्शियम संतुलित मात्रा में होना चाहिए।

प्रकाश की व्यवस्था

व्यस्क बटेरों या अण्डा देने वाली बटेरों के लिए 18 घंटा प्रकाश और 6 घंटा का अंधेरा चाहिए। मांस उत्पादन में वृद्धि करने के लिए बाजार भेजने से पहले 7-10 दिन तक 12 घंटा प्रकाश आवश्यक है।

अण्डा उत्पादन

मुर्गी के अपेक्षा बटेर अपने दैनिक अण्डा उत्पादन का 70 प्रतिशत दोपहर के 3-6 बजे के बीच करती है शेष अंधेरे में देती है। बेहतर उत्पादन के लिए अण्डे से बच्चा निकालने के लिए (ब्रिडर पैरेन्ट) नर एवं मादा 10-28 सप्ताह के आयु के बीच होनी चाहिए ।

एक नर बटेर के साथ 2-3 मादा बटेर को रखना चाहिए। बटेर के चोंक, पैर, नाखून थोड़ा काट देना चाहिए ताकि एक-दूसरे को घायल न कर सके।

टीकाकरण

बटेर पालन में टीकाकरण की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। अच्छी शारीरिक वृद्धि हेतु बटेर को मिनरल मिक्सचर या विटामिन सेप्लीमेंट रोज देना चाहिए।

निष्कर्ष

वर्त्तमान में जिस प्रकार रोजगार के साधन बन्द हो रहे हैं तथा ग्रामीण नव-युवकों का शहरों की तरफ पलायन हो रहा है उस परिवेश में यदि ग्रामीण युवा कृषि आधारित उद्योग आय का जरिया बना सकते हैं तो ग्रामीण परिवेश में बदलाव हो सकता है। शहरों पर बोझ कम हो सकता है। ग्रामीण परिवेश में आर्थिक स्मृद्धि आने से देश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिल सकती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र

हरिहरपुर, हाजीपुर (वैशाली)

मो0- 9931004508

Gmail: kvkatvaishali@gmail.com

www.rpcau.ac.in